गाधीं के जीवन में धर्म एवं धार्मिक भजनों का महत्व

डॉ. सन्दीप कुमार*

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गाधीं जी के बारे में कहा था कि "भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी कि हाड़-मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी कभी धरती पर आया था।" उन्होंने अपने समस्त जीवन में सिद्धांतों और प्रथाओं को विकसित करने पर जोर दिया और साथ ही दुनिया भर में हाशिये के समूहों और उत्पीड़ित समुदायों की आवाज उठाने में भी अतुलनीय योगदान दिया चाहे वह अफ़्रीका का समुदाय हो या भारतीय। गाधीं विश्व के मानव समुदाय के लिए हमेशा प्रयासरत रहे हैं। साथ ही महात्मा गाधीं ने विश्व के बड़े नैतिक और राजनीतिक एवं धार्मिक नेताओं जैसे-मार्टिन लूथर किंग जूनियर, नेल्सन मंडेला और दलाई लामा आदि को प्रेरित किया तथा लैटिन अमेरिका, एशिया, तथा यूरोप में सामाजिक एवं शान्ति आंदोलनों को प्रभावित किया। लोगों को आन्दोलन की अहिंसक तकनीक से परिचित करवाया। गाधीं हमेशा कहते थे कि वो अपने पीछे किसी विचारधारा को नहीं छोड़कर जाना चाहते लेकिन जीवन के अंत समय में उन्होंने कहा कि गाधीं मर सकता है लेकिन गाधींवाद कभी नहीं मर सकता। गाधीं के विचारों में उनके धर्म से संबंधित विचारों की अलग ही पहचान है। गाधीं कभी राजनीति को धर्म से अलग नहीं मानते थे। गाधीं का मानना था कि धर्म विहीन राजनीति एक मृत शरीर के समान है जिसमें बहुत गंद आती है। गाधीं जी के जीवन में धर्म का महत्व बहुत ज्यादा था। बचपन से ही एक धार्मिक व्यक्ति थे। महात्मा गाधीं मूलत: धर्मप्राण व्यक्ति थे और उनके सभी विचारों एवं कार्यक्रमों का प्रेरणा स्रोत उनके धार्मिक विश्वासों में खोजा जा सकता है। गाधीं ने राजनीतिक संघर्ष के अन्तिम निवारक यन्त्र के रूप में धर्म अथवा अध्यात्म को चयनित किया चूंकि गाधीं धर्म को व्यापक दृष्टि से दायित्वपूर्ण अर्थात् धर्म के नैतिक पक्ष पर बल देते थे। इस कारण गाधीं का धर्म से तात्पर्य कर्मकाण्ड एवं परिपाटी का पालन अथवा शास्त्र सम्मत: शास्त्राधारित प्रथा व प्रामाणित मान्यताओं से न होकर मानव जीवन को मर्यादित निर्देशित एवं गुणात्मक वृद्धि से युक्त सदवृत्ति से था। अर्थात धर्म से अपेक्षा यह है कि धर्म व्यक्ति व समाज के जीवन में वृद्धि का स्वस्थ साधन होना चाहिए। गाधीं ने धर्म के विश्व में प्रचलित संकीर्ण अर्थ को स्वीकार नहीं किया। उनका धर्म शाश्वत एव् सार्वभौम नैतिक नियमों का सग्रह है। उनके अनुसार 'धर्म का अर्थ नैतिकता से है। उन्होंने एक बार कहा था कि ''मैं ऐसे किसी धर्म को नही मानता जो नैतिकता का विरोध करता हो या नैतिकता के परे कोई उपदेश देता हो । धर्म तो वास्तव में नैतिकता को व्यावहारिक जीवन में प्रयुक्त करता है ।''[1]

महात्मा गाधीं व्यक्ति के जीवन में धर्म की परिपूर्व शक्ति को तो स्वीकार करते हैं। लेकिन उनके लिये धर्म देवीय, अलौकिक रहस्यात्मक पक्ष में कोई रूचि नहीं थी। गाधीं का सम्बन्ध प्रथमत: एवं मुख्यत: धर्म के सरल एवं नीतिपरक पक्ष से था गाधीं का धर्मवाद ईश्वर में विश्वास से स्रोत-प्रोत है, जो पर कुछ नहीं वरन् मानव

* असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय नेशनल महाविद्यालय सिरसा, हरियाणा।